

## दलहन उत्पादन में नये आयाम लाएंगी चने की नई प्रजातियां

उत्तराखण्ड राज्य प्रजाति विमोचन समिति द्वारा हाल ही में चने की तीन प्रजातियों, पंत चना 3, पंत चना 4 एवं पंत काबुली चना 2 को उत्तराखण्ड राज्य में उगाए जाने हेतु विमोचित किया गया है। पूर्व में किसानों द्वारा चने की उगाई जा रही विभिन्न प्रजातियां विभिन्न प्रकार के रोगों एवं कीटों से ग्रसित हो गई थी, जिससे कि किसान को प्राप्त होने वाली उपज पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा था तथा रोगों एवं कीटों की रोकथाम करने में उत्पादन लागत वृद्धि हो रही थी। जिससे किसानों की आय में निरन्तर कमी होती जा रही थी तथा किसान चना उत्पादन से विमुख होते जा रहे थे, इन परिस्थितियों में चना उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा विगत में रोग एवं कीट अवरोधी तथा अधिक उपज देने वाली चने की प्रजातियों के विकास हेतु शोध कार्य आरम्भ किये गये। जिसके परिणाम स्वरूप यह प्रजातियां विकसित की जा सकी।

उत्तरी भारत में पिछले विगत वर्षों में चने का क्षेत्रफल लगातार कम होता जा रहा था। अतः चने के उत्पादन में वृद्धि करने हेतु ऐसी प्रजातियों की आवश्यकता है जो अधिक उपज देने के साथ-साथ विभिन्न रोगों एवम् कीटों के विपरीत प्रभाव से मुक्त हों। विश्वविद्यालय के कुलपति डा०मंगला राय के द्वारा देशी चने की पंत चना 3 एवम् पंत चना 4 तथा काबुली चने की पंत काबुली चना 2 प्रजातियों को किसानों द्वारा उगाये जाने के लिये "उत्तराखण्ड राज्य प्रजाति विमोचन समिति" द्वारा जारी किये जाने पर हर्ष व्यक्त करते हुये निदेशक शोध डा०जे०पी०सिंह तथा दलहन प्रजनन परियोजना के वैज्ञानिकों डा० आर०के०पवार, डा०एस०के०वर्मा तथा डा०अन्जू अरोरा को बधाई दी। डा०मंगला राय द्वारा दलहन प्रजनन परियोजना के वैज्ञानिकों से बाजार की मांग के अनुरूप बड़े दाने वाली काबुली प्रजातियों के विकास पर विशेष ध्यान देने पर बल दिया। इस अवसर पर निदेशक शोध डा०जे०पी०सिंह द्वारा अवगत कराया गया कि आगामी रबी सीजन में चने की इन नवीन प्रजातियों का बीजोत्पादन बृहद् स्तर पर विश्वविद्यालय द्वारा कर किसानों को उच्च गुणवत्तायुक्त बीज उपलब्ध कराये जायेंगे।

**पंत चना 3** किस्म के० 850 (एल एम) x अवरोधी के संकरण से वंशावली विधि द्वारा विकसित की गयी है। उत्तराखण्ड के मैदानी क्षेत्रों में तीन वर्षों तक किये गये प्रजाति परिक्षणों में पंत चना 3 की औसत उपज मानक प्रजातियों पंत चना 186 एवं पूसा 256 से अधिक थी। किसानों के खेतों में किये गये परीक्षणों में भी पंत चना 3 की औसत उपज मानक प्रजातियों से अधिक पायी गई। इसका दाना बड़े आकार का होता है। 100 दानों का वजन लगभग 25 ग्राम है। यह प्रजाति चने की प्रमुख बीमारी उकठा रोग तथा फली छेदक कीट के लिए सहनशील है। इसकी परिपक्वता अवधि 145-150 दिन है।

**पंत चना 4** किस्म पी०जी० 92-97 x साइसर रेटिकुलेटम के संकरण से वंशावली विधि द्वारा विकसित की गयी है। उत्तराखण्ड के मैदानी क्षेत्रों में तीन वर्षों तक किये गये प्रजाति परिक्षणों में पंत चना 4 की औसत उपज 1837 किग्रा०/है० पायी गई। जोकि मानक प्रजाति पंत चना 186 से 16.3 प्रतिशत एवं पूसा 256 से 17.8 प्रतिशत अधिक थी। किसानों के खेतों में किये गये परीक्षणों में भी इसकी औसत उपज 1705 किग्रा०/है० पायी गई। उपरोक्त प्रजाति की भांति इसका दाना भी बड़े आकार का होता है। 100 दानों का वजन लगभग 26 ग्राम है। यह प्रजाति चने की प्रमुख बीमारी उकठा रोग तथा फली छेदक कीट के लिए सहिष्णु है। इसकी परिपक्वता अवधि 145-150 दिन है। देशी चने की उपरोक्त दोनों पुरानी प्रजातियों पंत चना 186 एवं पंत चना 114, जिनकी औसत पैदावार काफी कम है तथा जो विभिन्न

रोगों से ग्रसित हो गई है, के स्थान पर किसानों द्वारा उगायी जायेगी, जिससे चने के उत्पादन में व्यापक बढ़ोत्तरी होने की पूरी संभावनाएं है।

**पंत काबुली चना 2** किस्म बी0जी0 1053 x पंत काबुली चना 1 के संकरण से वंशावली विधि द्वारा विकसित की गयी है। उत्तराखण्ड के मैदानी क्षेत्रों में तीन वर्षों तक किये गये प्रजाति परिक्षणों में इसकी औसत उपज मानक प्रजाति पंत काबुली चना 1, से 16 प्रतिशत अधिक थी। किसानों के खेतों में किये गये परीक्षणों में भी इसकी औसत उपज मानक प्रजाति से अधिक पायी गई। यह प्रजाति समय से एवं देर से बुवाई के लिए उपयुक्त है। इसके 100 दानों का वजन लगभग 32 ग्राम है। यह प्रजाति चने की प्रमुख बीमारी उकठा रोग के लिए अवरोधी एवं फली छेदक कीट के लिए सहनशील है। इसकी परिपक्वता अवधि 135–150 दिन है।

